I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.H.I.-1

आधुनिक भारत: 1857–1964

(MODERN INDIA: 1857-1964)

By: A Panel of Educationists

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 200/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only | *Typesetting by:* Competent Computers | *Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.
7. The number of questions in *NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

आधुनिक भारत : 1857–1964
(MODERN INDIA: 1857-1964)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-5
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-6
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-5
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1-2
Sample Question Paper–1 (Solved)	1–8
Sample Question Paper–2 (Solved)	1–8
Sample Question Paper–3 (Solved)	1–8

S.No.	*Chapterwise Reference Book*	*Page*

| 1. | साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद
(Imperialism, Colonialism and Nationalism) | 1 |
| 2. | संगठित राष्ट्रवाद का उद्भव
(Emergence of Organised Nationalism) | 18 |

S.No.	Chapter	Page
3.	उग्र विचारधारा, राष्ट्रवाद तथा महात्मा गांधी **(Radical Trends, Nationalism and Mahatma Gandhi)**	28
4.	युद्ध के वर्षों में राष्ट्रवाद – प्रथम चरण **(Nationalism : Inter-War Years–I)**	35
5.	युद्ध के वर्षों में राष्ट्रवाद – द्वितीय चरण **(Nationalism in Inter-War Years–II)**	43
6.	युद्ध के वर्षों में राष्ट्रवाद – तृतीय चरण **(Nationalism : Inter-War Years–III)**	52
7.	प्रभुसत्तासम्पन्न राज्य की ओर **(Towards a Sovereign State)**	64
8.	विकासोन्मुखस्वतन्त्रभारत: 1947-1964 **(Independent India Towards Development: 1947-1964)**	70

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

आधुनिक भारत 1857–1964

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **खण्ड I** में से कोई दो प्रश्न, **खण्ड II** में से कोई **चार** प्रश्न तथा खण्ड **III** में से कोई दो संक्षिप्त टिप्पणियां करनी हैं।*

खण्ड–I

प्रश्न 1. भारत में औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के विकास के विभिन्न चरणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, प्रश्न 1, पृष्ठ-2, प्रश्न 2, पृष्ठ-3, प्रश्न 3

प्रश्न 2. 1857 का विद्रोह असफल क्यों रहा? किस प्रकार इसने भारत में अंग्रेजी नीति पर प्रभाव डाला?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-10, प्रश्न 10, पृष्ठ-11, प्रश्न 12

प्रश्न 3. भारत छोड़ो आन्दोलन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-64, प्रश्न 1

प्रश्न 4. भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें सैम्पल प्रश्न पत्र-3, पृष्ठ 1, प्रश्न 1

खण्ड–II

प्रश्न 5. पश्चिम और दक्षिण भारत में गैर-ब्राह्मण आन्दोलन के उदय का वर्णन कीजिए।

उत्तर–ज्योतिबा फुले का यह विचार था कि ब्राह्मणों को अंग्रेजी साहित्य तक की शिक्षा ने उन्हें सामाजिक समूह के रूप में सामाजिक संसाधन उपलब्ध कराए, जिसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में छा गए। वे ब्राह्मणों द्वारा शोषित समाज से मुक्ति चाहते थे और इसके लिए उन्होंने अंग्रेजी शासन को एक गुप्त वरदान कहा, जो ब्राह्मणों के जातीय प्रभुत्व के आधार पर प्रहार करता था। उनका विचार था कि शूद्रों को भी समाज में दूसरों के समान सम्मान पाने का अधिकार है। हिन्दू धर्म का मूल वेदों और स्मृतियों में निहित है और ब्राह्मणों ने अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए इसके स्वरूप को विकृत किया है, साथ ही यह विचार कि वर्ण-व्यवस्था की धारणा ईश्वरकृत और उचित है, वास्तव में हिन्दुओं की स्वार्थपूर्ण इच्छा का परिणाम है। उन्होंने शूद्रों पर ब्राह्मणवादी आधिपत्य को पोषित करने वाले हिन्दू समाज के विभाजनकारी स्वरूप के विरुद्ध दृढ़ता के साथ बहस की। उन्होंने हिन्दू धर्ममीमांसा और अवतारवाद को चुनौती देते हुए कहा कि जब समाज का पूर्णतया पतन हो जाता है, तो परिवर्तन के लिए अवतार होता है। इसे उन्होंने ब्राह्मण द्वारा रचा गया एक षड्यंत्र बताया। उनका विचार था कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को मूल रूप से बदलने में साक्षरता एक सशक्त माध्यम है और इससे महिला-पुरुष लिंग समानता में वृद्धि होगी। उन्होंने गंभीरतापूर्वक महिला साक्षरता का बीड़ा उठाते हुए 1842 में कन्या विद्यालय स्थापित किया।

पश्चिमी भारत में गैर-ब्राह्मण आंदोलन की विशेषताएं–

1. ब्राह्मणों के प्रभुत्व को नकार दिया।
2. हरिजनों के लिए शिक्षा की दिशा में प्रयास किए।
3. वेदों तथा वर्ण-व्यवस्था के आधार पर ब्राह्मणों को चुनौती दी।
4. महिला साक्षरता पर ध्यान केंद्रित किया।
5. दलितों को समाज में समान स्थान दिलाने तथा उनके अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। डॉ. अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, कर्वे आदि अनेक वे व्यक्ति थे, जिन्होंने हिंदू जाति को ब्राह्मणों के चंगुल से निकालने के लिए और उनके उद्धार के लिए कार्य किया।
6. महाराष्ट्र में महार आंदोलन द्वारा अछूतोद्धार के लिए किया गये प्रयास से राजनीतिक महत्त्व भी बढ़ा तथा सामाजिक स्थिति भी दृढ़ हुई।

इसे भी देखें–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ 39, प्रश्न 7

प्रश्न 6. देशी रियासतों में जन-आन्दोलनों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–ब्रिटिश भारत में फैले राष्ट्रीय आंदोलन का प्रसार रजवाड़ों में भी हुआ। इसकी पैठ 20 वीं सदी के प्रारंभ में हुई, जब आतंकवादी-राष्ट्रवादियों ने भागकर वहां शरण ली। परन्तु एक तरह से हम यह कह सकते हैं कि रियासतों की जनता स्वाधीनता आंदोलन में 1920-21 के असहयोग एवं खिलाफत आंदोलन के बाद सही ढंग से

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

शामिल हुई। इस आंदोलन के फलस्वरूप विभिन्न रियासतों; यथा– मैसूर, हैदराबाद, बड़ौदा, जामनगर, इंदौर, नवानगर, काठियावाड़ और दक्कन के रियासतों में 'स्टेट (राज्य) पीपुल्स (लोग) कॉन्फ्रेंन्स' (सम्मेलन) नामक संस्था का गठन हुआ। इस प्रकिया की पराकाष्ठा सन् 1927 ई. में हुई, जब 'ऑल (पूरा) इंडिया (भारत) स्टेट (राज्य) पीपुल्स (लोग) कॉन्फ्रेंन्स (सम्मेलन)' का आयोजन किया गया एवं इसमें विभिन्न रियासतों के 700 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई–बलवन्त राय मेहता, मणिलाल कोठारी एवं जी. आर. अभ्यंकर ने। इन्होंने देसी रियासती क्षेत्र में उत्तरदायी सरकार की स्थापना की। जो आंदोलन चला रखा था, उसे ही प्रजा मंडल आंदोलन कहा जाता है। जहां तक कांग्रेस का रियासतों के आंदोलन में हस्तक्षेप का प्रश्न है, यह 1920 के नागपुर अधिवेशन से संभव हो सका। जिसमें रियासत के शासकों को यह कहा गया कि वे अविलंब वहां पर उत्तरदायी सरकार का गठन करें, साथ ही रियासतों की जनता को कांग्रेस संगठन में सदस्य बनने की अनुमति दे दी। परन्तु इसके साथ ही यह भी कहा गया कि वे कांग्रेस के नाम पर रियासत में किसी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों का प्रारंभ नहीं कर सकते। ऐसा उन्होंने निम्न कारण से किया: ब्रिटिश भारत एवं रियासतों की स्थिति में अंतर था। रियासतों के मध्य भी स्थिति अलग-अलग थी। वहां की जनता दलित, पिछड़ी एवं अशिक्षित थी। कानूनी तौर पर रियासतें स्वाधीन थीं। रियासत की जनता को कांग्रेस के नाम पर किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं करने देने का उद्देश्य यह था कि वे स्वयं संघर्ष के लिये संगठित हों। 1927 में कांग्रेस ने 1920 वाली बात को ही दुहराया एवं 1929 के लाहौर अधिवेशन में नेहरू ने स्पष्ट कहा कि देसी रियासतें अब शेष भारत से अलग नहीं रह सकतीं एवं इन रियासतों की तकदीर का फैसला सिर्फ वहाँ की जनता ही कर सकती है। बाद के वर्षों में कांग्रेस ने राजाओं से रियासतों में मौलिक अधिकारों की बहाली की माँग की।

1935 के एक्ट का रियासतों की जनता पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। इस एक्ट के अनुसार एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना की व्यवस्था की गई, जिसमें रजवाड़ों को 38 प्रतिशत तक सीट (स्थान) आवंटित किया गया। इसका प्रभाव यह पड़ा कि पहले तो रजवाड़ों की जनता को लगा कि वे भारत के अंग हैं, एवं दूसरा यह कि कांग्रेस एवं शासन दोनों अंग्रेजों की इस चाल को भांप गए कि वे राष्ट्रीय ताकतों को तोड़ना चाहते हैं। 1937 के चुनाव का प्रभाव यह था कि 1937 के चुनावों के पश्चात् कांग्रेस कई प्रांतों में सत्तासीन हुई, अब वह महज एक पार्टी (दल) नहीं थी, अपितु शासक वर्ग भी थी, जो अपने शासित प्रांतों के पड़ोसी रियासतों पर प्रभाव डाल सकती थी। इसके शासन में आने का प्रभाव भी पड़ा। रियासतें नवीन सुधारों से अनुप्राणित हो, संघर्ष के लिये तत्पर हो उठी। अनेक रियासतों में जहाँ कोई संगठन नहीं था, वहाँ बड़ी संख्या में प्रजामंडलों का गठन हुआ। हैदराबाद, मैसूर, ट्रावणकोर, जयपुर, कश्मीर आदि रियासतों में जन संघर्ष बृहत पैमाने पर प्रारंभ हुआ। इन संघर्षों में नेतृत्व देने वाले कतिपय नाम थे-शेख अब्दुल्ला, यू.एन. ढेबर, जमनालाल बजाज आदि।

प्रश्न 7. खिलाफत आन्दोलन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में खिलाफत आंदोलन एक महत्त्वपूर्ण इस्लामी आंदोलन था। यह यूरोपीय शक्तियों के विरुद्ध आरंभ किया गया था। यह आंदोलन खलीफा द्वारा शासित तुर्की साम्राज्य के समर्थन में एक साथ एकजुट करने के लिए तुरन्त भारतीय मुस्लिम समुदाय द्वारा एक प्रयास था। इस दौरान अंग्रेजों ने तुर्की के खलीफा पद को समाप्त कर दिया और उसके साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया था। नि:सन्देह मुसलमानों के इस्लाम के संरक्षक के रूप में खलीफा माना जाता है। वे अपने धर्म की रक्षा के लिए केवल धूल में मिलाना पसंद करते हैं। प्रमुख मुस्लिम नेता, मौलाना अबुल कलाम आजाद ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया था। उल्लेखनीय है कि उनके नेतृत्व में उत्तर भारत के अधिकांश भागों में खिलाफत आंदोलन का शुभारंभ किया गया।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफत के उद्देश्य से खिलाफत आंदोलन, इसके साथ उनका गैर-सहकारिता आंदोलन से संबंध है। इस आंदोलन को महात्मा गांधी का समर्थन प्राप्त था। 1920 के मध्य खिलाफत के नेताओं ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ हिंदुओं और मुसलमानों के एक संयुक्त मोर्चे की स्थापना में मदद की और गांधीजी के अहिंसक तरीकों को पूर्ण समर्थन दिया गया। यह संयुक्त बल ब्रिटिश शासन के लिए एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन यह आंदोलन लंबे समय तक नहीं चला। कुछ हिंसक घटनाओं के कारण महात्मा गांधी ने अपने असहयोग आंदोलन समाप्त कर दिया। नि:सन्देह खिलाफत आंदोलन के लिए यह एक बड़ा झटका था। बहरहाल अंग्रेजों से मांग की गई कि वे मुसलमानों के धार्मिक प्रक्रिया की स्थिति में कोई हस्तक्षेप न करें। 31 अगस्त, 1919 को खिलाफत दिवस मनाया गया। कांग्रेस पार्टी ने इस आंदोलन में मुसलमानों को भरपूर सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में खिलाफत आंदोलन का विशेष महत्त्व है।

इसके अतिरिक्त इस आंदोलन से हिंदू-मुस्लिम एकता को बल मिला। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के संबंध सुधरने लगे और मुसलमान भी अंग्रेजी सरकार का विरोध करने लगे।

प्रश्न 8. 1937 के चुनावों के बाद कांग्रेसी सरकारों के कार्यों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-55, प्रश्न 4

प्रश्न 9. 1945-46 के दौरान जन-आन्दोलनों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-66, प्रश्न 4

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

NEERAJ®

E.H.I. - 1

आधुनिक भारत : 1857-1964

MODERN INDIA : 1857-1964

साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद

(IMPERIALISM, COLONIALISM AND NATIONALISM)

1

Neeraj Publications

प्रश्न 1. उपनिवेशवाद के प्रथम पक्ष की मुख्य विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

Discuss the salient features of the first phase of colonialism.

उत्तर–उपनिवेशवाद (Colonialism) कोई सतत् घटनाक्रम या संयुक्त संरचना नहीं है। यह विभिन्न स्तरों पर परिवर्तित होता रहता है। यद्यपि उपनिवेशवादी देश दासता व शोषण से पीड़ित रहते हैं, तब भी दासता व शोषण के रूप क्रमशः बदलते रहते हैं।

www.neerajbooks.com

प्रथम स्तर (First Phase)

उपनिवेशवाद के प्रथम चरण में व्यापारिक प्रक्रिया द्वारा साधनों (Sources) का शोषण होता है। इसका विवेचन हम भारत के संदर्भ में करेंगे। इस चरण को व्यापार एकाधिकार या प्रत्यक्ष स्वायत्तता (Monopoly and Direct Appropriation) के नाम से भी जाना जाता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत पर विजय प्राप्त की थी। इस समय कम्पनी के दो आधारभूत उद्देश्य थे–

कम्पनी का प्रथम उद्देश्य भारत के व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त करना था। कम्पनी की नीति थी कि भारतीय उत्पादन के क्रय-विक्रय में यूरोपीय देश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से स्पर्द्धा न करें, ताकि ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारतीय उत्पादन को यथासम्भव खरीदकर विश्व बाजार में यथासम्भव ऊँचे दामों पर बेच सके। इस प्रकार वे भारतीय आर्थिक बढ़ोत्तरी को व्यापारिक एकाधिकार द्वारा प्राप्त करना चाहते थे। रानी विक्टोरिया द्वारा जारी एक राजकीय आदेश जो ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वीकृत किया गया था, के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत पर एकाधिकार प्राप्त हो गया। कम्पनी ने राजनीतिक प्रभुत्व बनाए रखने व देश के विभिन्न भागों पर नियन्त्रण करने के लिए रानीतिक विघटन का भी लाभ उठाया। उपनिवेशवाद का दूसरा मुख्य उद्देश्य था–सरकारी राजस्व (Government Revenue) को राजसत्ता पर नियन्त्रण करके सीधे रूप से हथिया लेना। कम्पनी को प्रतिद्वन्द्वी यूरोपीय देशों व भारतीय शासकों से युद्ध करने, नौसैनिक ठिकानों के रख-रखाव व व्यापारिक चौकियों के चारों ओर सेना नियुक्त करने के लिए भारी आर्थिक साधनों की आवश्यकता थी।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

व्यापारिक एकाधिकार एवं सरकारी राजस्व से कम्पनी का लाभ बढ़ गया । अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय व्यापारियों एवं हस्तकला उत्पाद पर एकाधिकारात्मक नियंत्रण (Monopolistic Control) करने के लिए अपनी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग किया । धीरे-धीरे भारतीय व्यापारी तबाह हो गए । बुनकर एवं कारीगर अपने माल को कम दामों पर बेचने के लिए विवश हो गए । फिर भी ब्रिटिश निर्माताओं के माल का भारत में आयात ऊँचे स्तर पर नहीं हुआ, अपितु इसके विपरीत भारतीय वस्त्रों के निर्यात में वृद्धि हुई । राजनीतिक विजय के बाद भारतीय राज्यों के राजस्व पर दोहरी नीति की मदद से प्रत्यक्ष नियन्त्रण (Direct Control) हो गया । कम्पनी व उसके कर्मचारियों ने अनैतिक रूप से भारत से खूब धन ऐंठा ।

इस अवधि में उपनिवेशवाद की विशेषता यह थी कि उपनिवेशवाद के अंतर्गत प्रशासन, न्यायिक व्यवस्था, पासपोर्ट, संचार, कृषि, उद्योग, संस्कृति, समाज और शिक्षा के क्षेत्र में कोई आधारभूत परिवर्तन नहीं आया । यहाँ तक कि धर्म प्रचारक (Missionaries) को भी इसका प्रचार करने से रोक दिया गया । इस समय तक ब्रिटिश शासन आधुनिक व विकसित व्यवस्था के रूप में नहीं था ।

प्रश्न 2. उपनिवेशवाद के द्वितीय चरण के मुख्य लक्षणों का विवेचन कीजिए ।

Discuss the main features of the second phase of Colonialism.

उत्तर–स्वतंत्र व्यापार का उपनिवेशवाद (Colonialisation of Free Trade)

द्वितीय चरण को स्वतंत्र व्यापार का उपनिवेशवाद के नाम से भी जाना जाता है । ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के बाद ब्रिटेन में भारी संघर्ष छिड़ गया । ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce) पर स्वयं का नियन्त्रण था । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारी शीघ्र ही धनी हो गए । कर्मचारी ब्रिटेन में अपने सामान की दृष्टि से आर्थिक रूप से अधिक शक्तिशाली हो गए । इसके अतिरिक्त 1750 के बाद ब्रिटेन औद्योगिक क्रांति से गुजर रहा था । नए विकासशील औद्योगिक पूँजीपतियों ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर प्रहार करने शुरू कर दिए और इसके अधीन व्यापार व वाणिज्य से होने वाले लाभ में अपना-अपना भाग मांगने लगे । वे अपना कच्चा माल विशेषतः कपास और अनाज के बढ़ते हुए उत्पाद के लिए भारत को अपना उपनिवेश बनाना चाहते थे । भारत अपने निर्यात को बढ़ाकर ही विदेशी मुद्रा कमाकर ब्रिटेन से अधिक वस्तुएँ खरीद सकता था ।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

ब्रिटिश औद्योगिक पूंजीपतियों के हित को पूरा करने के लिए अब कम्पनी भारत से कच्चा माल निर्यात करने तथा वस्त्र आयात करने के पक्ष में थी ।

सन् 1813 में राजपत्र अधिनियम (Charter Act) लागू हो गया । इसके अनुसार कम्पनी ने भारत में अधिकतर राजनैतिक व आर्थिक अधिकार खो दिए । ब्रिटिश सरकार ब्रिटिश पूंजीपतियों के हित में अपने अधिकार का प्रयोग करती थी । चाय और अफीम को छोड़कर भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का व्यापार पर से एकाधिकार समाप्त हो गया । अब सभी ब्रिटिश व्यापारियों के लिए व्यापार व वाणिज्य के दरवाजे खुल गए थे । दूरवर्ती क्षेत्रों से कच्चा माल मंगवाने के लिए यातायात और संचार के साधन खुल गए । सन् 1853 में बम्बई से थाणे तक पहली रेलगाड़ी चलाई गई । सरकार ने नदियों, नालों व सड़कों का सुधार किया और भाप से चलने वाला जहाज बनाया ।

सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र की ओर भी ध्यान दिया । पहली बार सरकार ने शिक्षा के लिए एक लाख रुपए स्वीकृत किए । वंशवाद, जातिवाद व भ्रमात्मक विश्वास (Supertitions) की मूल रूप से आलोचना की गई । समाज-सुधारक राजा राममोहन राय सामाजिक बुराइयों के कट्टर विरोधी थे ।

इस अवधि में भारत के पारम्परिक उद्योग नष्ट हो गए । भारत अपने वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध था । अब भारत वस्त्रों का निर्यातक (Exporter) था, परन्तु लंकाशायर के वस्त्रों का आयातक (Importer) था । भारत का धन ब्रिटेन की ओर लगातार बहता रहा ।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 3. उपनिवेशवाद के तीसरे चरण के मुख्य लक्षणों की व्याख्या कीजिए ।

Discuss the salient features of the third stage of Colonialism.

उत्तर–विदेशी निवेश व उपनिवेशवाद का अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्द्धा का युग (Era of Foreign Investments and International Competition for Colonies)

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में एक नए उपनिवेशवाद का प्रादुर्भाव हुआ । ये परिवर्तन यूरोप के कई देशों यू०एस०ए० एवं जापान में औद्योगीकरण में विस्तार के कारण आए । वैज्ञानिक जानकारी का उद्योगों में प्रयोग, विश्व मंडी के एकीकरण (Unification of World Market) व अन्तर्राष्ट्रीय यातायात के साधनों में क्रांति से उपनिवेशवाद का नया रूप उभरा ।

तीव्र औद्योगीकरण के कारण शहरों की आबादी बढ़ती गई, जिसके लिए अधिक अनाज की आवश्यकता पड़ी ।

व्यापार व उद्योग में विकास के अतिरिक्त पूंजीवादी देशों की पूंजी में बहुत वृद्धि हुई । एक बार फिर औद्योगिक रूप से पूंजीपति देशों ने अपने अतिरिक्त पूंजी निवेश के लिए नए क्षेत्रों की तलाश करनी शुरू की । ये देश पूंजी निवेश के लिए संसार को विभाजित व पुनः विभाजित करने लगे । उदाहरणतः ब्रिटेन ने नारा दिया *"ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता ।"* इसी प्रकार फ्रांस सभ्यता मिशन की दुहाई देने लगा और जापान सर्व-एशियाईकरण (Pan-Asianism) व स्वयं को एशियाई लोगों का अग्रणी कहलाने लगा ।

इस अवधि में प्रतिद्वन्द्वी देशों ने ब्रिटेन की स्थिति को कमजोर बना दिया । अतः भारत में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए साम्राज्यवादी नीतियों में ढील दी गई । 1860 के बाद ब्रिटेन की पूंजी का बहुत बड़ा भाग रेलवे, भारत सरकार को ऋण, व्यापार, कोयला खनन, जूट मिल, जहाजरानी व भारतीय बैंकिंग में लगाया गया । भारत को स्व-सरकार या प्रजातन्त्र (Self-Government or Democracy) के लिए अयोग्य बनाने में यहाँ की भौगोलिक स्थिति (Geographical Condition), वंशवाद (Racism), जलवायु (Climate), धर्म, संस्कृति (Culture) और सामाजिक संगठनों का प्रयोग किया ।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

प्रश्न 4. साम्राज्यवाद के विभिन्न विचारों के विषय में लिखिए ।

Write about different Schools of Imperialism.

या

साम्राज्यवाद के विभिन्न मतों के विषय में लिखें ।

Write about different views of Imperialism.

उत्तर–देश के साम्राज्य व प्रभाव को बढ़ाने के विश्वास को साम्राज्यवाद (Imperialism) कहते हैं । इसके अतिरिक्त कई विद्वानों ने साम्राज्यवाद के विषय में और भी कई विभिन्न मत प्रकट किए हैं :

यूरोपियन विचारधारा (European School)

हॉब्सन हिल्फडिंग, रोजा लक्जमबर्ग और **लैनिन** आदि कई यूरोपीय विद्वानों ने साम्राज्यवाद (Imperialism) के विषय में अपने विचार दिए हैं । हॉब्सन के अनुसार पूंजीवाद (Capitalism) से साम्राज्यवाद का विस्तार होता है । पूंजीवाद में पूंजी का असमान वितरण होता है । पूंजीपतियों के हाथ में लाभ का अधिक अंश लगता है और मजदूरों को कम मजदूरी मिलती है । अतः निम्न स्तर की आय से आम लोगों में उपभोग की स्तर भी नीचा रहता है । अतः निम्न उपभोग (Low Consumption) के कारण सभी औद्योगिक उत्पादों (Industrial Products) की खपत देश में नहीं हो पाती, क्योंकि इनके खरीदार नहीं मिलते, जिसके कारण इन उत्पादों (Products) का निर्यात किया जाता है ।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

रडोल्फ हिल्फडिंग के अनुसार पूंजीवाद बड़े बैंकों व वित्तीय संस्थाओं (Financial Institutions) के अधीन होता है, जो एकाधिकारिक औद्योगिक घरानों (Monopolistic Business Houses) के अनुकूल चलते हैं । इस विश्लेषण को **लेनिन** ने स्वीकार किया और इसका प्रचार किया ।

भारतीय राष्ट्रीय विचारधारा (Indian National School)

भारतीय राष्ट्रीय अर्थशास्त्रियों ने भी साम्राज्यवाद का विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण किया है । **दादा भाई नौरोजी, महादेव गोविन्द राणाडे, आर0सी0 दत्त** तथा अन्यान्य ने भी ब्रिटिश साम्राज्य के मुख्य अंशों की अनुभूति पर प्रकाश डाला है ।

धन के प्रवाह के विषय में **नौरोजी** एवं **दत्त** ने अपने लेखों में काफी कुछ लिखा है । उन्होंने बताया कि 18वीं शताब्दी में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारियों ने अनैतिक ढंग से लूटकर भारत के धन को ब्रिटिश को स्थानांतरित किया । उन्होंने बताया कि ब्रिटिश राज ने किस प्रकार भारत के लघु उद्योगों को नष्ट किया । स्वतंत्र व्यापार एवं अबाधित व्यापार की नीति के कारण भारत में औद्योगिक उत्थान के अवसर कम हो गए और अन्ततः भारत औद्योगिक इंग्लैंड का कृषि क्षेत्र बन गया ।

अन्त में भारतीय विचारधारा ने सेना, पुलिस व अन्य सरकारी विभागों पर खर्च की भी आलोचना की । यह खर्च इतना अधिक था कि ब्रिटिश सरकार ने भारत के विकास की अनदेखी कर दी ।

प्रश्न 5. उपनिवेशवाद क्या है ? इसकी मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए ।

What is Colonialism ? Discuss its characteristic features.

Neeraj Publications

उपनिवेशवाद (Colonialism)

www.neerajbooks.com

उत्तर–एक देश जब दूसरे पूंजीवादी देश के अधीन होता है, तो ऐसी स्थिति को उपनिवेशवाद कहते है । दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि जब एक देश किसी अन्य विदेशी शासन के अधीन हो जाता है, सैन्य शक्ति में शक्तिशाली देश दूसरे देशों को नई बस्ती (उपनिवेश) बनाकर उसके मजदूरों का शोषण करता है, तो ऐसी स्थिति को उपनिवेशवाद कहते हैं । साम्राज्यवादी देश का इन उपनिवेशों पर न केवल राजनीतिक नियन्त्रण होता है, अपितु वे अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए उनकी आर्थिक नीति भी निर्धारित करते हैं ।

मुख्य विशेषताएँ (Characteristic Features)

उपनिवेशवाद के कई रूप होते हैं । शासक देश शासित देश की राजनीतिक अधीनता और आर्थिक नीतियाँ निर्धारित करते हैं । ये सभी आर्थिक निर्णय लेते हैं ; जैसे उपलब्ध संसाधनों का उपयोग, कृषि व उद्योग का विकास, कर लगाना तथा समाज के विभिन्न वर्गों में आय का वितरण करना ।

प्रश्न 6. आर्थिक व राजनीतिक ढाँचे में उपनिवेशवाद के प्रभाव की व्याख्या कीजिए ।

Discuss effects of Colonialism in the economic and political structure.

उत्तर–ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने राजनैतिक क्षेत्र को मजबूत करने के लिए विशेष रूप से भारत के कच्चे माल का विदोहन किया। इस नीति से प्रायः कलाकार, किसान, मजदूर व व्यापारी सभी प्रभावित हुए ।

औद्योगीकरण (Industrialization)

भारत के पारम्परिक उद्योगों का विनाश उपनिवेशवाद का प्रारम्भिक परिणाम था । भारतीय पारम्परिक उद्योगों के विनाश की प्रक्रिया 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उस समय आरम्भ हुई, जब भारतीय वस्तुएँ व्यापार के लिए काफी महत्त्वपूर्ण थी । प्रारम्भ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का लाभ भारत में लागत मूल्य व इंग्लैंड में व्यापार मूल्य में व्यापार में अन्तर था । भारतीय वस्त्र पूरी दुनियाँ में प्रसिद्ध थे । 1600 से 1757 तक भारतीय मसालों की मांग यूरोपीय देशों में बहुत अधिक थी ।

www.neerajbooks.com